महाबंधो भाग-१ (फोल्डर नं. ००१३८८)

मुख्य टाइटल

समर्पण ---------- ५

General Editorial---------- 6

प्रकाशकीय ---------- ८

प्रास्ताविकं किंचित् ---------- १०

द्वितीय आवृत्ति का प्रधान-सम्पादकीय ---------- १२

Foreword ---------- 13

द्वितीय संस्करण ---------- १५

Preface---------- 16

Preface to the Second Edition ---------- 22

प्राक्कथन ---------- २३

प्रस्तावना ---------- ३२

विषय-सूची ---------- ११९

मङ्गलाचरण ---------- २

मूल प्रकृतिसमुत्कीर्तन आठ प्रकार के कर्म ---------- २०

ज्ञानावरण कर्म की पाँच प्रकृतियाँ ---------- २१

आभिनिबोधिक ज्ञानावरण-प्ररूपणा ---------- २१

श्रुतज्ञानावरण-प्ररूपणा ---------- २२

१. अवधिज्ञानावरण-प्ररूपणा

भवप्रत्यय और क्षयोपशमनिमित्तक ---------- २४

अवधिज्ञान के तीन भेद ---------- २५

अवधिज्ञान सम्बन्धी १९ काण्डकों का निरूपण ---------- २६

परमावधि का काल ---------- २७

परमावधि का क्षेत्र ---------- २८

२. मनःपर्ययज्ञानावरण-प्ररूपणा

दो प्रकार की प्ररूपणा ---------- २९

क्षेत्र तथा काल की अपेक्षा प्ररूपणा ---------- ३१

३. केवलज्ञानावरण-प्ररूपणा

त्रैकालिक तता त्रिलोक विषयक ज्ञान ---------- ३२

सर्वज्ञता ---------- ३३

४. दर्शनावरणादि कर्म-प्ररूपणा

दर्शनावरणादि कर्म-प्रकृतियाँ ---------- ३३

कुल १४८ कर्म-प्रकृतियाँ ---------- ३४

५. सर्वसम्बन्धोसर्वबन्ध-प्ररूपणा

सर्वबन्ध तथा नोसर्वबन्ध ---------- ३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्कृष्टबन्ध-अनुत्कृष्टबन्ध-प्ररूपणा ---------- ३५
जघन्यबन्ध-अजघन्यबन्ध-प्ररूपणा ---------- ३५
६. सादि-अनादि-ध्रुव-अध्रुवबन्ध-प्ररूपणा
ओघ से सादिबन्ध ---------- ३६
आयुबन्ध के विषय में नियम ---------- ३६
ओघ तथा आदेश का अर्थ ---------- ३७
ध्रुव तथा अध्रुवबन्ध ---------- ३७
७. बन्धस्वामित्वविचय-प्ररूपणा
ओघ से चौदह गुणस्थानों में प्रकृतिबन्ध की व्युच्छित्ति ---------- ३७
तीर्थंकर नामगोत्रकर्म का बन्ध ---------- ४१
आदेश से तीसरे नरक तक तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध ---------- ४७
तिर्यंचों में बन्धक ---------- ४८
मिथ्यात्व गुणस्थान के बन्धक ---------- ४८
८. काल-प्ररूपणा
एक जीव की अपेक्षा वर्णन ---------- ५५
तिर्यंचों में बन्धकाल ---------- ५६
देवों में जघन्य तथा उत्कृष्ट आयु ---------- ५९
एकेन्द्रियों में जघन्य तथा उत्कृष्ट बन्धकाल ---------- ६१
पंचेन्द्रियों में जघन्य तथा उत्कृष्ट बन्धकाल ---------- ६२
स्त्रीवेद में जघन्य तता उत्कृष्ट बन्धकाल ---------- ६६
उपशम श्रेणी की अपेक्षा बन्धकाल ---------- ६८
अभव्यसिद्धिक जीव की अपेक्षा बन्धकाल ---------- ६९
तिर्यंचगति त्रिक का ओघ से बन्धकाल ---------- ७०
मनुष्यगति और मनुष्यगत्यानुपूर्वी का बन्धकाल ---------- ७०
मनुष्यगति पंचक का जघन्य तथा उत्कृष्ट बन्धकाल ---------- ७१
संयमासंयम का स्थितिकाल ---------- ७२
लेश्याओं में बन्धकाल ---------- ७२
सम्यक्त्व में बन्धकाल ---------- ७६
आहारकों-अनाहारकों में बन्धकाल ---------- ७८
९. अन्तरानुगम-प्ररूपणा
एक जीव की अपेक्षा ओघ से वर्णन ---------- ७९
प्रत्याख्यानावरणी-अप्रत्याख्यानावरणी रूप आठ कषायों का बन्ध-काल ---------- ८०
अप्रमत्तसंयत का उत्कृष्ट अन्तर ---------- ८१
नारकियों में आश से बद्ध्यमान प्रकृतियों में अन्तर ---------- ८२
तिर्यंचों में बन्ध का अन्तर ---------- ८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवों में बन्ध का अन्तर ---------- ८७
एकेन्द्रियों में बन्ध का अन्तर---------- ८९
विकलत्रयों में बन्ध का अन्तर ---------- ९१
पंचेन्द्रिय, त्रसकाय तथा उनके पर्याप्तकों में अन्तर ---------- ९१
योगों तथा काययोगों का अन्तर-काल ---------- ९३
वेदों का अन्तरकाल---------- ९६
ज्ञानावरणादि का अन्तर नहीं---------- १०१
अज्ञान जीवों का उत्कृष्ट अन्तर ---------- १०२
मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान तथा मनःपर्ययज्ञान में अन्तर ---------- १०३
चक्षुदर्शनी तथा अचक्षुदर्शनी का अन्तर ---------- १०५
छहों लेश्या वाले जीवों में अन्तर ---------- १०६
क्षायिक सम्यक्त्व तथा वेदक सम्यक्त्व में अन्तर ---------- १०८
उपशम सम्यक्त्वी में अन्तर ---------- १०९
आहारक तथा अनाहारकों में अन्तर ---------- ११०
१०. स्वस्थानसन्निकर्ष-प्ररूपणा
ज्ञानावरण की प्रकृति का बन्धक नियमतः चारों का बन्धक ---------- १११
निद्रानिद्रा का बन्धक नियम से दर्शनावरण का बन्धक---------- १११
अनन्तानुबन्धी क्रोध के बन्धक के मिथ्यात्व का बन्ध होने का नियम नहीं---------- ११२
अप्रत्याख्यानावरण-प्रत्याख्यानावरण तथा संज्वलन क्रोध के बन्धक के मिथ्यात्व
का बन्ध होने का नियम नहीं---------- ११३
संज्वलन क्रोध का बन्धक मान, माया, लोभ रूप संज्वलन का नियम से बन्धक ---------- ११४
नोकषायादि का बन्धक मिथ्यात्व का स्यात् बन्धक है ---------- ११४
नरकत्रिक का बन्धक---------- ११६
तिर्यंचगति का बन्धक---------- ११६
मनुष्यगति का, देवगति का बन्धक---------- ११७
एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति नामकर्म का बन्धक ---------- ११८
औदारिक, वैक्रियक शरीर का बन्धक---------- ११९
तैजस शरीर का बन्धक ---------- १२०
छह संहननों के बन्धक, अबन्धक ---------- १२१
परघात के बन्धक ---------- १२३
आताप और उद्योत के बन्धक ---------- १२४
बादर-सूक्ष्म के बन्धक---------- १२५
स्थिर के बन्धक ---------- १२७
गोत्र, अन्तराय के बन्धक ---------- १२८
आदेश से चारों गतियों के बन्धक ---------- १२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदेश से चारों गतियों के बन्धक ---------- १२८
काययोगों में बन्धक ---------- १२९
संयतासंयत, वेदक-उपशम सासादन सम्यक्त्व में बन्धक ---------- १३१
११. परस्थानसन्निकर्ष-प्ररूपणा
ओघ से आभिनिबोधिक ज्ञानावरण के बन्धक ---------- १३२
निद्रा, निद्रा-निद्रा के बन्धक ---------- १३३
साता-असाता के बन्धक ---------- १३४
नोकषायों के बन्धक ---------- १३४
मिथ्यात्व के बन्धक ---------- १३५
अप्रत्याख्यानावरण-प्रत्याख्यानावरण-संज्वलन क्रोध के बन्धक ---------- १३६
वेदों के बन्धक ---------- १३७
चारों गतियों के बन्धक ---------- १४०
आहारकादि शरीरों के बन्धक ---------- १४४
संस्थान एवं संहननादि के बन्धक ---------- १४४
उद्योत के बन्धक ---------- १४५
तीर्थंकर तथा उच्चगोत्र के बन्धक ---------- १४६
काययोगों के बन्धक ---------- १४७
लेश्याओं में बन्धक ---------- १४८
१२. भंगविचयानुगम-प्ररूपणा
ओघ से नाना जीवों की अपेक्षा साता के बन्धक ---------- १४९
आदेश की अपेक्षा नरकगति के बन्धक ---------- १५०
तिर्यंचों में बन्धक ---------- १५१
मनुष्यत्रिक में बन्धक ---------- १५२
मनुष्यलब्ध्यपर्याप्तकों में बन्धक ---------- १५२
देवों में बन्धक ---------- १५३
काययोगों में बन्धक ---------- १५३
क्षायिक, वेदक, उपशम सम्यक्त्व में बन्धक ---------- १५६
अनाहारकों में बन्धक ---------- १५७
१३. भागाभागानुगम-प्ररूपणा
ओघ से वर्णन ---------- १५८
आदेश से साता-असाता के बन्धक ---------- १६०
मनुष्य तथा तिर्यंचगति के बन्धक ---------- १६२
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में बन्धक ---------- १६३
मनुष्य-देव-नरकायु के बन्धक ---------- १६४
पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धि पर्याप्तक-अपर्याप्तकों में बन्धक ---------- १६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्यलब्ध्यर्याप्त-पर्याप्तकों के बन्धक---१६७
ओघ से देवगति में बन्धक---१६८
एकेन्द्रियों में बन्धक ---१७०
सूक्ष्म अपर्याप्तकों में बन्धक ---१७२
पंचेन्द्रियों में बन्धक---१७३
त्रसों में बन्धक---१७४
योगों में बन्धक---१७५
काययोगों में बन्धक---१७६
वेदों में बन्धक ---१७९
क्रोधकषाय में बन्धक ---१८०
साता-असाता के बन्धक---१८३
मति-श्रुत-अवधि-मनःपर्ययज्ञान में बन्धक---१८४
परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यातसंयम में बन्धक---१८५
छहों लेश्याओं में बन्धक---१८६
क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में बन्धक ---१८९
वेदक-उपशम-सासादन सम्यक्त्व में बन्धक ---१९०
सम्यक्त्वमिथ्यात्वी में ध्रुव प्रकृतियों के बन्धक---१९०
आहारक-अनाहारकों में साता-असाता के बन्धक---१९१

१४. परिमाणानुगम-प्ररूपणा

ओघ से वर्णन---१९४
आदेश से नरक-तिर्यंचगति में बन्धक ---१९५
मनुष्यों में बन्धक ---१९६
ओघ से देवगति में बन्धक---१९७
त्रसपर्याप्तकों में बन्धक ---१९८
योगों में बन्धक---१९९
स्त्रीवेद में बन्धक ---२०१
मति-श्रुत-अवधइज्ञान में बन्धक---२०२
छहों लेश्याओं में बन्धक---२०३
सम्यग्दृष्टियों में बन्धक ---२०४

१५. क्षेत्रानुगम-प्ररूपणा

ओग से बन्धक ---२०६
साता-असाता के बन्धक---२०९
काययोगों के बन्धक---२०९
आदेश से नारकियों में बन्धक ---२१०
तिर्यंचों में बन्धक---२११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्यत्रिकों में बन्धक ----------२१२
एकेन्द्रियों में बन्धक ----------२१४
१६. स्पर्शनानुगम-प्ररूपणा
ओघ से बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२१७
मिथ्यात्व तथा अप्रत्याख्यानावरण के बन्धकों का सर्वलोक-स्पर्शन ----------२१९
तीनों वेदों तथा चारों आयु के बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२२०
आदेश से नारकियों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२२१
तिर्यंचगति के बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२२२
छहों संहननों के बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२२५
पंचेन्द्रिय-तिर्यंच-लब्ध्यपर्याप्तकों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२२९
लबध्यपर्याप्तक मनुष्यों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२३०
देवों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२३३
एकेन्द्रियों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२३६
पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२३८
ओघ से काययोगियों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२४२
वेदों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२४७
मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी में बनधकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२५५
आभिनिबोधिक-श्रुत-अवधिज्ञानियों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२५८
संयतासंयत जीवों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२६०
छहों लेश्याओं में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२६२
सम्यक्त्वों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२६८
आहारक-अनाहारकों में बन्धकों का क्षेत्र-स्पर्शन ----------२७२
१७. कालानुगम-प्ररूपणा
नाना जीवों की अपेक्षा ओघ से वर्णन ----------२७३
आदेश से नारकियों में बन्धकाल ----------२७४
तिर्यंचों में बन्धकाल ----------२७५
मनुष्यों में बन्धकाल ----------२७६
योगों, काययोगों तथा वेदों में बन्धकाल ----------२७८
मति-श्रुत-अवधिज्ञान, परिहार-विशुद्धिसंयम तथा संयतासंयतों में बन्धकाल ----------२८३
लेश्याओं तथा सम्यक्त्वों में बन्धकाल ----------२८४
१८. अन्तरानुगम-प्ररूपणा
ओघ से अन्तर-निरूपण ----------२८७
आदेश से नारकियों तता तिर्यंचों में अन्तर ----------२८८
मनुष्यों तथा देवों में अन्तर ----------२८९
योगों में अन्तर ----------२९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेदों में अन्तर----२९२
आभिनिबोधिक श्रुत, अवधि, मनःपर्यय में अन्तर----२९३
सम्यग्दृष्टियों में अन्तर----२९४
१९. भावानुगम-प्ररूपणा
भावानुगम का निर्देश----२९७
ओघ से बन्धकों के भावों का निरूपण----२९८
आदेश से नारकियों में बन्धकों के भाव----३०१
तिर्यंचों में बन्धकों के भाव----३०५
एकेन्द्रियों में बन्धकों के भाव----३०७
देवों में बन्धकों के भाव----३०८
काययोगों में बन्धकों के भाव----३०९
वेदों के बन्धकों के भाव----३१२
अपगतदेव में बन्धकों के भाव----३१५
सामायिक, छेदोपस्थापना संयम में बन्धकों के भाव----३१६
तेजोलेश्या में बन्धकों के भाव----३१७
तिर्यंच-मनुष्य-देवायु के बन्धकों कें भाव----३१८
अनाहारकों में बन्धकों के भाव----३२०
२०. स्वस्थानजीव-अल्पबहुत्व-प्ररूपणा
अल्पबहुत्व के भेद----३२१
ओघ से अल्पबहुत्व का निर्देश----३२१
आदेश से नारकियों में अल्पबहुत्व का कथन----३२५
तिर्यंचों में अल्पबहुत्व----३२६
चारो गतियों की आयु के बन्धक जीव----३२७
देवगति के बन्धक जीव----३२८
औदारिक शरीर के बन्धक जीव----३२८
पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धपर्याप्तकों में जीव----३२९
मनुष्यगति के बन्धक जीव----३२९
दर्शनावरण, साता-असाता, लोभ, संज्वलन तथा नोकषाय के अबन्धक जीव----३३०
चारों गतियों के अबन्धक जीव----३३१
आहारक शरीर के बन्धक जीव----३३७
काययोगियों में बन्धक जीव----३३९
वेदों में बन्धक जीव----३४१
कषाय-अकषायों में बन्धक जीव----३४३
मनुष्य-देव-नरकायु के बन्धक-अबन्धक जीव----३४६
सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, यथासंख्यातसंयम एवं संयतासंयतोंमें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बन्धक-अबन्धक जीव ---------- ३४७
तीन कृष्ण, नील, तेजलेश्याओं में बन्धक-अबन्धक जीव ---------- ३४८
अन्य तीन लेश्याओं में बन्धक-अबन्धक जीव ---------- ३५०
पाँचों शरीरों, संस्थानो तथा संहननों के बन्धक जीव ---------- ३५२
सम्यग्दृष्टियों में बन्धक-अबन्धक जीव ---------- ३५३
आनुपूर्वियों में आहारक शरीर के बन्धक-अबन्धक जीव ---------- ३५४
वैक्रियिक, तैजस, कार्मण शरीर के बन्धक जीव ---------- ३५६
अनाहारकों में बन्धक जीव ---------- ३५७
२१. परस्थान-जीव-अल्प-बहुत्व-प्ररूपणा
ओघ से बन्धक जीव ---------- ३५८
आदेश से नारकियों में बन्धक जीव ---------- ३५९
तिर्यंचों में बन्धक जीव ---------- ३६०
मनुष्यों में बन्धक जीव ---------- ३६२
देवों में बन्धक जीव ---------- ३६३
एकेन्द्रियों में बन्धक जीव ---------- ३६५
त्रस पर्याप्तकों में बन्धक जीव ---------- ३६६
योगों तथा काययोगियों में बन्धक जीव ---------- ३६७
वेदों में बन्धक जीव ---------- ३६९
आभिनिबोधिक-श्रुत-अवधइज्ञान में बन्धक जीव ---------- ३७१
मनःपर्ययज्ञान में बन्धक जीव ---------- ३७२
छहों लेश्याओं में बन्धक जीव ---------- ३७३
सम्यग्दृष्टियों में बन्धक जीव ---------- ३७५
आहारक-अनाहारकों में बन्धक जीव ---------- ३७८
२२. स्वस्थान अद्धा-अल्पबहुत्व-प्ररूप
ओघ से परिवर्तमान प्रकृतियों के बन्धकों का जघन्य-उत्कृष्टकाल ---------- ३७९
चौदह जीवसमासों में बन्धकों का काल ---------- ३७९
आदेश से नारकियों में बन्धकों का काल ---------- ३८३
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों तथा मनुष्यो में बन्धकों का काल ---------- ३८४
काययोगियों में बन्धकों का काल ---------- ३८६
सम्यग्दृष्टियों, मति-श्रुत-अवधि मनःपर्ययज्ञान में बन्धकों का काल ---------- ३८७
छहों लेश्याओं में बन्धकों का काल ---------- ३८७
२३. परस्थान-अद्धा-अल्पबहुत्व-प्ररूपणा
परिवर्तमान सत्रह प्रकृतियों के बन्धकों का काल ---------- ३८८
आदेश से नारकियों में बन्धकों का काल ---------- ३८९
मनुष्य-तिर्यंचायु के बन्धकों का जघन्य काल ---------- ३९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेश्याओं में बन्धकों का काल ---------- ३९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org